विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष 2561, कार्तिक पूर्णिमा 4 नवंबर, 2017, वर्ष 47, अंक 5

For online Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

सब्बत्थ वे सप्पुरिसा चजन्ति, न कामकामा लपयन्ति सन्तो।
सुखेन फुट्ठा अथ वा दुखेन, न उच्चावचं पण्डिता दस्सयन्ति॥
धम्मपदपालि- ८३, पण्डितवग्गो

सत्पुरुष सर्वत्र (पांचों स्कंधों में) छंदराग छोड़ देते हैं। संत जन कामभोगों के लिए बात नहीं चलाते। चाहे सुख मिले या दुःख, पंडित (जन) (अपने मन का) उतार-चढ़ाव प्रदर्शित नहीं करते।

प्रथम गृहस्थ विपश्यनाचार्य सया तैजी (2)

(1873-1945)

(निम्नलिखित वृत्तांत आंशिक रूप से म्यंमा के एक धर्माचार्य ऊ ठे लाईं द्वारा लिखित "सया तै जी" नामक पुस्तक से लिया गया है।)

क्रमशः ..... (भाग 2)

... लैडी सयाडो से आशीर्वाद लेकर सया तैजी अपने संबंधियों सहित दक्षिणी बर्मा में स्थित अपने गांव डल्ला (प्याब्वेजी) लौट आये। लैडी सयाडो के इस गुरुतर आदेश का पालन करने के बारे में परिवार के अन्य सदस्यों से बात की। सया तैजी के मन में पूरे बर्मा में घूम कर शिविर लगाने का विचार आया। उन्हें लगा कि वे इससे ज्यादा लोगों के संपर्क में आयेंगे। परंतु उनकी साली ने सुझाव दिया-- ''यहां आपके पास धम्म-केंद्र है और साधकों के लिए भोजन की व्यवस्था करके हम सब आपकी मदद कर सकते हैं। आप यहीं रह कर क्यों नहीं शिविर लेते? कई लोग हैं जो विपस्सना सीखने यहीं आयेंगे।'' वे मान गये और प्याब्वेजी (डल्ला) में ही रह कर अपने केंद्र में नियमित शिविर लगाने लगे।

उनकी साली ने जैसी भविष्यवाणी की थी, अनेक लोग आने लगे और ध्यानाचार्य के रूप में सया तैजी विख्यात हो गये। वे साधारण किसानों, मजदूरों से लेकर पालि ग्रंथों के विद्वानों तक को विपश्यना सिखाने लगे। यह गांव अंग्रेजों की राजधानी रंगून से दूर नहीं था, इसलिए ऊ बा खिन जैसे सरकारी कर्मचारी/अधिकारी और शहरी लोग भी आने लगे।

जैसे-जैसे अधिकाधिक साधक आने लगे, उन्होंने ऊ न्यो, ऊ बा सो और ऊ न्यूं जैसे पुराने अनुभवी साधकों को सहायक आचार्य बना दिया।

प्रतिवर्ष केंद्र का विस्तार होता गया और शिविरों में भिक्षु, भिक्षुणियों सहित 200 साधकों तक की संख्या होने लगी। 'केंद्र' में पर्याप्त जगह नहीं होने के कारण अधिक अनुभवी पुराने साधक अपने घर पर ही ध्यान करते थे और केवल प्रवचनों के लिए केंद्र में आते थे।

लैडी सयाडो के केंद्र से वापस आने के बाद सया तैजी एकांत एवं मौन में अकेले रहने लगे और दिन में एक ही बार भोजन करते थे। भिक्षुओं की ही तरह वे भी अपनी आध्यात्मिक उपलब्धियों की चर्चा किसी से नहीं करते थे। पूरे बर्मा में उन्हें अनागामी माना जाता था, यानी, जिसने निर्वाण से पूर्व की अवस्था प्राप्त कर ली। पर उन्होंने कभी भी नहीं बताया कि वे स्वयं या उनके शिष्य किस स्तर पर हैं। बर्मा में वे ''अनागामी सया तैजी'' के नाम से जाने जाते थे।

उन दिनों कदाचित अन्य कोई गृहस्थ विपस्सना के आचार्य नहीं थे। फलस्वरूप सया तैजी को कुछ ऐसी मुश्किलों का सामना करना पड़ा जो भिक्षुओं को नहीं करना पड़ता। जैसे, कुछ लोग उनका विरोध इसलिए करते थे कि वे शास्त्रों के उतने विद्वान नहीं थे। सया तैजी ने इन आलोचनाओं की परवाह नहीं की और साधना से मिलने वाले परिणामों को स्वयं अपना बयान करने दिया।

एक बार उनके खेतों में काम करने वाले मजदूरों ने उनकी सज्जनता का गलत फायदा उठा कर फसलों में से उन्हें हिस्सा नहीं दिया। यद्यपि खेती की देखभाल से उन्होंने विरक्ति ले ली थी तथापि वे अपने मार्ग से हट कर उसको सुलझाने चले गये ताकि उनके विरोधी क्रोध व हिंसा के वशीभूत हो कर अपनी अकुशल प्रवृत्ति को और गहरी न करें।

अपने स्वयं के अनुभव और लैडी सयाडो की दीपनियों पर निर्भर हो, उन्होंने तीस वर्षों तक सभी आने वालों को ध्यान सिखाया। उन्होंने हजारों लोगों को विपस्सना सिखाने का अपना लक्ष्य 72 वर्ष की आयु में, 1945 में पूरा किया। उनकी पत्नी का देहांत हो गया था, उनकी साली भी लकवाग्रस्त हो गयी थी और स्वयं उनका स्वास्थ्य भी क्षीण हो रहा था। इसलिए उन्होंने पचास एकड़ जमीन धम्म-कक्ष के निर्वाह के लिए अलग रख कर, अपनी शेष सारी संपत्ति भांजे-भतीजों और भांजी-भतीजियों को बांट दिया।

उनके पास बीस भैंसे थे, जिन्होंने उनके खेतों को वर्षों तक जोता। उन्हें उन लोगों के सुपुर्द कर दिया जिन पर विश्वास था कि उनके साथ दया से व्यवहार करेंगे। उन भैंसों को इस दुहाई के साथ भेज दिया-- ''तुमने मुझे भरपूर लाभ पहुँचाया, तुम्हारे कारण चावल उपजा, अनाज आया। अब तुम अपने काम से मुक्त हो। तुम्हें इस तरह के जीवन से मुक्ति मिले और अगला भव अच्छा मिले।''

सया तैजी अपना इलाज कराने और वहां रहने वाले अपने शिष्यों से मिलने रंगून गये। उन्होंने अपने कुछ शिष्यों को बताया कि वे रंगून में ही देहत्याग करेंगे और उनका दाह-संस्कार उस जगह पर हो जहां पहले कभी किसी का दाह-संस्कार नहीं हुआ हो। उन्होंने यह भी कहा कि उनकी अस्थियों को किसी पवित्र स्थान पर नहीं रखें, क्योंकि वे अब तक सभी प्रकार के संयोजनों, (मानव को बांधने वाले बंधनों) से मुक्त नहीं हुए, अर्थात वे अरहंत नहीं हुए हैं।

उनके शिष्यों में से किसी ने श्वेडगॉन पगोडा की उत्तरी ढलान की ओर 'आजनिगॉन' पर एक ध्यान केंद्र की स्थापना की थी। उसके समीप एक पनाहागार था जिसे दूसरे विश्वयुद्ध काल में बमबारी के समय बचने के लिए बनाया गया था। सया तैजी इसका उपयोग ध्यान के शून्यागार के रूप में करते थे। रात में वे अपने किसी सहायक आचार्य को साथ रखते थे। रंगून से उनके कई शिष्य जिनमें महालेखाकार ऊ बा खिन और आयकर आयुक्त ऊ सां थैं शामिल थे, जब भी समय मिलता, मिलने आते रहे।

जो भी उनसे मिलने आये, उन्हें वे लगन के साथ साधना करने; ध्यान सीखने आने वाले भिक्षु, भिक्षुणियों का आदर करने; काया, वाणी और चित्त पर संयम रखने; प्रत्येक कर्म से भगवान बुद्ध का सम्मान करने का उपदेश देते थे।

उन्हें हर शाम को श्वेडगॉन पगोडा जाने की आदत थी, पर जमीन के अंदर बनायी गयी गुफा में बैठने के कारण एक सप्ताह बाद उन्हें जुकाम के साथ ज्वर हो गया। डाक्टरों के इलाज के बावजूद उनकी स्थिति बिगड़ती गयी। उनकी स्थिति नाजुक होते ही उनके सारे भांजे-भतीजे प्याब्वेजी से रंगून पहुँच गये थे। हर रात उनके लगभग पचास शिष्य एक साथ ध्यान में बैठते थे। इन सामूहिक साधनाओं में सया तैजी कुछ बोलते नहीं थे, पर मौन रह कर ध्यान करते थे।

एक रात करीब दस बजे उनके पास कई शिष्य थे (ऊ बा खिन उस समय नहीं पहुँच पाये थे), वे चित्त लेटे हुए थे और उनकी श्वास ऊंची और दीर्घ हो गयी थी। दो शिष्य ध्यानपूर्वक देख रहे थे और बाकी साधना में लीन थे। ठीक ग्यारह बजे श्वास और गहरी हो गयी। प्रत्येक श्वास-प्रश्वास के लिए पांच मिनट लगने लगे। इस प्रकार की तीन दीर्घ श्वास के बाद सांस पूर्णतया रुक गयी और सया तैजी का देहांत हो गया।

उनके शरीर का दाह संस्कार श्वेडगॉन पगोडा की उत्तरी ढलान पर किया गया और बाद में सयाजी ऊ बा खिन और उनके शिष्य वहां एक छोटे पगोडा का निर्माण किये। पर इस अनुपम आचार्य का सही स्मारक यह सत्य है कि लैडी सयाडो से उन्हें प्राप्त धम्म को समाज के प्रत्येक वर्ग में फैलाने का महान कार्य आज भी निर्विघ्न रूप से चल रहा है। सबका मंगल हो।

सया तैजी के बारे में संस्मरण : -- सत्यनारायण गोयन्का

कृषक आचार्य

रंगून के उस पार, एक गांव में ऊ तै (श्री तै) नाम के किसान रहते थे। फसल काटने के बाद, हर साल, बर्मा में यहां-वहां इस खोज में जाते कि कहीं कोई ध्यान के आचार्य मिलें। अंततोगत्वा उन्हें एक आचार्य मिले जिन्होंने आनापान के द्वारा मन को एकाग्र करना सिखाया। सात साल तक वे इस आचार्य के पास महीनों के लिए जाते रहे और समाधि में कुशल हो गये। तत्पश्चात वे विपश्यना सीखने किसी आचार्य की खोज में निकले और सौभाग्यवशल लैडी सयाडो मिले। इस सम्माननीय भिक्षु ने इस शिष्य की पात्रता को जाना और विधि सिखा दी। अगले सात वर्ष तक वे लैडी सयाडो के साथ ध्यान करके प्रज्ञा में भी प्रवीणता प्राप्त कर ली। अब वे इस सीखी हुई विद्या को दूसरों को सिखाने से अपने आपको रोक नहीं पाये। लैडी सयाडो की अनुमति प्राप्त करके वे अपने गांव लौटे और दूसरों को सिखाना प्रारंभ किया।

प्रारंभ में कोई उनके पास आता ही नहीं था। 'यह क्या जाने धम्म के बारे में', लोगों ने व्यंग किया। ''यह भी हम जैसा गृहस्थ है। इसने न तो सिर मुँड़वाया है और न ही भिक्षुओं के पीत-वस्त्र पहनता है। यह क्या जाने विपस्सना?''

सया तैजी (आचार्य तै जी) हतोत्साहित नहीं हुए। उनके खेत में कुछ मजदूर थे। वे उन्हें बुलाकर बोले, 'आप सामान्यत: हमेशा खेत में काम करते हो, लेकिन आप चाहें तो मैं अपने घर में काम करने के लिए वेतन दूंगा।'

''जैसे आप चाहें साहब, हमें तो पैसे मतलब है।'' सया तैजी उन्हें एक परदा डाले कमरे में ले गये। उन्होंने कहा, ''ठीक है, बैठो, आंखें बंद करो और अपना सारा ध्यान सांस पर लगाओ।''

वे लोग चौंक गये। ''क्या हमें यही काम करना है?'' वे सोचने लगे, ''शायद हमारे मालिक पागल हो गये! यह कहते हैं, सिर्फ सांस देखने के लिए हमें खिलायेंगे और पैसे भी देंगे! अगर वे यही काम करवाना चाहते हों तो हम यही करेंगे।'' इस तरह वे लोग सया तैजी के कहे अनुसार चलने लगे। चाहे कोई मजदूर अनपढ़ हो या पढ़े-लिखे प्रोफेसर, यह विद्या सबको एक जैसा परिणाम देती है।

शिविर पूरा होने के बाद मजदूर दूसरों से कहने लगे, ''हमारे मालिक एक ऐसी अद्भुत ध्यान-विद्या सिखाते हैं, जो मन में सच्ची शांति लाती है।'' लेकिन लोग उनको सुनते नहीं थे। सोचते थे कि अपना गुणगान करवा कर लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए, उन्होंने मजदूरों को पैसे दिये होंगे।

लेकिन कुछ महीनों बाद पूरे गांव के लोगों में चर्चा का विषय बना कि ऊ तै के मजदूरों में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है। उनमें से कई पहले कर्कश और गुंडे जैसे थे जो हमेशा नशा करके झगड़ा करते रहते थे। पर अब वे विनम्र और शांत हो गये। अब गांववाले उत्सुकतावश इनसे पूछने लगे, ''तुम्हारे मालिक ने तुम्हें क्या सिखाया?'' उन लोगों ने अपनी क्षमता के अनुसार बताया और गांव वाले प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके, ''अच्छा, यही तो बुद्ध शास्त्र बताते हैं। शायद यह व्यक्ति जरूर कुछ जानता है। उसके पास जाकर देखें कि क्या सिखाता है?''

चाहे जिस आशय से लोग शिविरों में आते हों, अगर वे सही ढंग से साधना करेंगे तो उन्हें परिणाम अवश्य मिलेंगे। इस प्रकार सया तैजी का नाम फैलने लगा और वे लैडी सयाडो के सर्वश्रेष्ठ शिष्य बने।

आग से खेलना

सया तैजी के पास ध्यान सीखने वालों में एक बुद्धानुयायी विद्वान भी आया। दुर्भाग्यवश वह विपस्सना को स्वयं अनुभव करने से ज्यादा उसका सिद्धांत जानने को उत्सुक था। फिर भी उसने सफलतापूर्वक शिविर पूरा किया और अपनी उपलब्धि से खुश होकर चला गया।

कुछ महीनों बाद वह सज्जन सया तैजी से मिलने वापस आया और साथ में एक पुस्तक की कुछ प्रतियां भी लाया। उसने कहा, ''श्रीमान, ध्यान कैसे करना है, इस बारे में मैंने एक किताब लिखी है और आपको गुरु मान कर उसे आपको समर्पित किया है।''

''क्या तुमने इतनी ही प्रतियां मुझे समर्पित की?'' सया तैजी ने पूछा।

''नहीं श्रीमान, सभी समर्पित हैं।''

''ठीक है, तुम अपनी किताब की सभी प्रतियां समर्पित करना चाहो, तो सबको यहां लाओ।'' विद्वान बड़ा प्रसन्न हुआ, शायद यह समझते हुए कि वे उसे आशीर्वाद देने के लिए कोई कर्मकांड करेंगे। कुछ दिन बाद वह गाड़ीभरी किताबें लेकर वापस आया।

''क्या ये तुम्हारी किताब की सभी प्रतियां हैं? सया तैजी ने पूछा।

''जी हां'', सज्जन ने बड़े गर्व के साथ उत्तर दिया।

''ठीक है'', ''उन्हें उस खाली पड़ी जमीन पर रखो।'' उनके कहे अनुसार उस सज्जन ने अच्छे ढंग से किताबों का अंबार लगाया।

''अब रसोई से किरोसिन और दिया सलाई लाओ'', सया तैजी ने कहा।

''श्रीमान, किरोसिन और दिया सलाई?'' सज्जन अचम्भे में पड़ गया; किसी कर्मकांड में इनका क्या काम?

''हां, किरोसिन और दिया सलाई।'' फिर एक बार सज्जन ने, अनिच्छा से ही सही, सुने अनुसार किया। जब वह बोतल और दिया सलाई लेकर वापस आया तो सया तैजी ने कहा, ''अच्छा, अब किताबों पर किरोसिन छिड़क कर आग लगाओ।''

अब विद्वान अपने आपको रोक नहीं पाया। ''क्या श्रीमानजी, आप मेरे साथ मजाक कर रहे हैं। इसे लिखने में मैंने महीनों श्रम किया है।''

सया तैजी बोले ''अच्छा होता, अगर तुम यह समय ध्यान करने में लगाते और उसका सदुपयोग करते। अगर तुम ध्यान का गहरा अभ्यास नहीं करोगे तो दूसरों को उसके बारे में क्या समझाओगे? तुमने ठीक ढंग से समझा है फिर भी दूसरों से कैसे अपेक्षा करते हो कि वे किताब पढ़ कर ध्यान सीखेंगे? जिस तरह बच्चे आग से खेल कर अपने आपको जलाते हैं, वैसे ही वे अपने आपको जलायेंगे। अच्छा है किताबों को ही जला दो।''

(सयाजी ऊ बा खिन जरनल से साभार)

विश्व विपश्यना पगोडा परिसर में धर्मयात्रा का इतिहास बताता 'संग्रहालय'

हम बड़े भाग्यशाली हैं कि पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्काजी से हमें परम परिशुद्ध धर्म प्राप्त हुआ।

सयाजी ऊ बा खिन की आज्ञा शिरोधार्य कर सन 1969 में भारत आकर, उन्होंने एक अद्वितीय व्यक्तित्व का परिचय देते हुए अनेक स्तरों पर धर्म का विस्तार किया। शिविर संचालन के साथ-साथ सहायक आचार्यों तथा ट्रस्टियों की नियुक्ति की, विपश्यना केंद्रों की स्थापना की, शिविर संचालन हेतु रेकार्डिंग की, नियमावली बनाये, भविष्य के लिए दिशा-निर्देश दिये तथा बुद्धवाणी आदि को सदियों तक जीवित रखने के लिए 'विपश्यना विशोधन विन्यास' की स्थापना करके पालि तिपिटक एवं अन्य पुस्तकों का प्रकाशन व प्रसारण करवाया। 'बुद्धवाणी' आज विश्व की चौदह लिपियों में इंटरनेट पर सुलभ है। उनके द्वारा लिखे गये अनेकानेक लेख, प्रवचनों आदि का प्रकाशन हो रहा है।

और फिर मुंबई में बहु-उद्देशीय 'विश्व विपश्यना पगोडा' का निर्माण करवाया जहां बुद्ध की पवित्र धातु सन्निधानित है, जिसकी ऊर्जा साधकों को अपूर्व शक्ति प्रदान करती है। पगोडा के अंदर एक विशाल ध्यान-कक्ष है। यह पगोडा मानो धर्म की मशाल लेकर मूर्तरूप से खड़ा है और आने वाले समय में ***'एहि-पस्सिको'*** का आवाहन करता हुआ न जाने कितने लोगों का पथ-प्रदर्शन करता रहेगा। यहां दर्शकों के लिए प्रदर्शनी और धर्म-श्रवण-कक्ष भी है।

श्री गोयन्काजी की परिकल्पना थी कि धर्म के द्वितीय सासन (पुनरुत्थान काल) में ऐसे संग्रहालय (Museum) और संरक्षणालय केंद्र (Digital Archives Centre) बने, जो आने वाली पीढ़ियों को यह बतावे कि द्वितीय बुद्ध-शासन का पुनरुत्थान कैसे हुआ और कैसे यह प्रारंभ में बूंद-रूप में था, जो बाद में समुद्र-रूप हो गया। इन्हें देख कर पर्यटक बुद्ध के महान उपदेशों से परिचित हो सकेंगे, आनापान तथा विपश्यना के बारे में जान सकेंगे और उनमें धर्मसंवेग जागेगा।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए विश्व विपश्यना पगोडा के न्यासियों ने निर्णय किया कि आप सब से प्राप्त सामग्रियों का एक विशाल **संग्रहालय** (Museum) बनाया जाय और एक **आंकिक संरक्षणालय केंद्र** (Digital Archives Centre) भी, जो विपश्यना संबंधी सभी प्रकार की उपलब्ध सामग्रियों को पीढ़ियों तक सुरक्षित रखे।

संग्रहालय में विस्तृत विवरण के साथ गुरुजी की श्रद्धा और प्रेरणा के स्रोत रहे-- गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन, उनके गुरु सया तैजी तथा उनके गुरु भदंत लैडी सयाडो के बारे में भी प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर झांकियां प्रस्तुत की जायँगीं।

इस विशाल परियोजना में तन, मन और धन से अपनों का साथ होना अनिवार्य है। सामग्री एकत्र करने, उसे सुनियोजित ढंग से लगाने आदि में हम सब का सहयोग अत्यंत आवश्यक है। तभी यह महान कार्य अपना सही रूप ले सकेगा।

अच्छा हो, अधिकाधिक साधकगण जिनके पास पूज्य गुरुजी से संबंधित **चित्र, पत्र, लेख, घटनाओं का संस्मरण** इत्यादि जो हो, वे उन्हें भेज कर इस पावन परियोजना को सफल बनावें। आप की अमूल्य निधि निश्चित रूप से इस धर्म-यात्रा का महत्त्वपूर्ण अंग बनेगी।

हमारा सौभाग्य है कि इतिहास के इस महत्त्वपूर्ण मोड़ पर हम अपने आपको खड़ा पा रहे हैं। हम आगे बढ़ें और चिरकाल से चली आ रही शुद्ध धर्म की गुरु-शिष्य परंपरा के प्रति, विशेषकर पूज्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए, इन महान परियोजनाओं का महत्त्वपूर्ण अंग बन कर, अपनी पुण्य पारमी विकसित करें। अतः जिन लोगों के पास जो भी सामग्री उपलब्ध हो, वे कृपया उसे स्पीड पोस्ट या कूरियर से निम्न पते पर यथाशीघ्र सीधे भेजें। **"ऐप"** नवंबर के अंत तक **कार्यक्षम** होगा, अतः बाकी लोग तब भेज सकेंगे। :---

-- **व्यवस्थापक**, विपश्यना विशोधन विन्यास, आर्काइव्स कार्यालय, गोराई खाड़ी, बोरीवली (पश्चिम), मुंबई-400091. ईमेल-dhammaarchives@globalpagoda.org

वृहत् आंकिक संरक्षणालय केंद्र

विश्व विपश्यना पगोडा परिसर में एक बड़े आंकिक अभिलेखागार या संरक्षणालय केंद्र (Digital Archives Center) की योजना पर काम चल रहा है जिसमें पूज्य गुरुजी ने, जब से काम शुरू किया तब से लेकर आज तक के सभी प्रकार के आलेख, टिप्पणियां (नोट्स), पुस्तकें, छायाचित्र (फोटो), कथानक (ऑडियो), चलचित्र (वीडियो), विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा किये गये सभी प्रकार के शोधकार्य, विपश्यना पगोडा संबंधी छायाचित्र, नक्शे व अन्य संबंधित दस्तावेज आदि कंप्युटर के माध्यम से सदियों तक सुरक्षित रहेंगे।

यह कार्य कई वर्षों तक चलता रहेगा। कार्यारंभ करने के लिए हमें अनेक कम्प्युटर, स्कैनर, प्रिंटर आदि तथा सभी प्रकार के सामान रखने हेतु समुचित स्थान एवं परियोजना-संचालन हेतु कार्यकर्ताओं के वेतन आदि की आवश्यकता होगी। प्रारंभ में लगभग पच्चीस लाख तथा वेतनादि के लिए लगभग 15-20 लाख वार्षिक खर्च का अनुमान है।

"विपश्यना विशोधन विन्यास" का रजिस्ट्रेशन सेक्शन 35 (1) (3) के अंतर्गत हुआ है, जिससे दानदाताओं को 125 प्रतिशत आयकर की छूट प्राप्त होगी। जो भी साधक-साधिका इस पुण्य में भागीदार बनना चाहें वे निम्न पते पर संपर्क कर सकते हैं-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2.Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, A/c. Office: 022-62427512/ 62427510; Email: audits@globalpagoda.org; Bank Details of VRI -- 'Vipassana Research Institute', Axis Bank Ltd., Sonimur Apartments, Timber Estate, Malad (W), Mumbai - 400064, Branch - Malad (W). Bank A/c No. - 911010004132846; IFSC No.- UTIB0000062; Swift code: AXISINBB062.

प्राथमिक पालि अभ्यास कार्यक्रम

दि. 7 अप्रैल से 22 मई, 2018, योग्यता-- 3 10-दिवसीय शिविर, एक सतिपट्ठान शिविर तथा आचार्य की अनुमति के अतिरिक्त 12वीं कक्षा पास होना चाहिए। स्थान-- परियत्ति भवन, ग्लोबल पगोडा परिसर, गोराई. आवेदन-पत्र हेतु निम्न शृंखला का अनुसरण करें-- http://www.vridhamma.org/Theory-And-Practice-Courses या फोन करें- 022-62427560 (9:30AM to 5:30PM), E-mail: mumbai@vridhamma.org

पगोडा पर रात भर रोशनी का महत्त्व

पूज्य गुरुजी बार-बार कहा करते थे कि किसी धातु-पगोडा पर रात भर रोशनी रहने का अपना विशेष महत्त्व है। इससे सारा वातावरण धर्म एवं मैत्री-तरंगों से भरपूर रहता है। सगे-संबंधियों की याद में ग्लोबल पगोडा पर रोशनी-दान के लिए प्रति रात्रि रु. 5000/- निर्धारित किये गये हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, Email: audits@globalpagoda.org

डोंग्यू गैट्सलिंग ननरी में विपश्यना शिविर

कांगड़ा जिला (हि.प्र.) में जेसुमा टेंजिंग पाल्मो द्वारा संचालित इस ननरी में 63 लोगों का एक शिविर अगस्त, 2017 में लगा, जिसमें 60 तिब्बती भिक्षुणियां (nuns) थीं। इसका संचालन एक वरिष्ठ विपश्यनाचार्या ने किया और 3 स.आचार्या तथा 1 धर्मसेविका ने सहयोग दिया। परिणाम बहुत अच्छा रहा और ननरी द्वारा 2018 में दुबारा ऐसे शिविर की मांग की गयी है। सबका मंगल हो!

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्रीमती उज्ज्वला अड्डिगा, सिकंदराबाद

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री बिहारी चौरे, वसई रोड
2. श्रीमती ज्योति मोलिया, राजकोट
3. श्रीमती गोली गीतांजली, हैदराबाद
4. श्री सुकेतु ओझा, मुंबई

बाल-शिविर शिक्षक

1. Mr Preecha Seesaeng Thailand
2. Mr Arthit Intarasit Thailand

Registered No. NSK/235/2015-2017

वि. पगोडा के समीप 'धम्मालय' में निवास-सुविधा

जो साधक पवित्र बुद्ध-धातुओं और बोधिवृक्ष के सान्निध्य में रह कर गंभीर साधना करने के इच्छुक हों उनके लिए पगोडा के बगल में बने **'धम्मालय अतिथि-गृह'** में निवास की उत्तम सुविधा उपलब्ध है। रात्रि में पगोडा की भव्यता और प्रभा-मंडल दर्शनीय होता है। धम्मालय में 34 कमरे दो विस्तरों के हैं और 2 सुइट (कमरों के सेट) भी। कमरों के साथ चाय, नाश्ता, भोजनादि की भी सुविधा है। अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए निम्न पते पर **संपर्क** करें— श्री महेश मोदी, फोन- 022-62427599, 8291894645 एवं ईमेल— info.dhammalaya@globalpagoda.org

आगामी 14 जनवरी के एक-दिवसीय महाशिविर के समय 50% की विशेष छूट दी जा रही है। जो भी साधक चाहें वे 13 से 15 (तीन दिन) तक इस सुविधा का लाभ ले सकते हैं। संभवतः अन्य महाशिविरों के समय भी यह सुविधा उपलब्ध हो सके।

पगोडा परिसर में धर्मसेवकों तथा साधकों के लिए निःशुल्क आवास-सुविधा की योजना

प्रत्येक वर्ष "विश्व विपश्यना पगोडा", गोराई- बोरीवली (मुंबई) में एक दिवसीय महाशिविरों का आयोजन होता रहता है। उनमें शामिल होने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। परंतु दुर्भाग्य से वहां उनके रात्रि-विश्राम की कोई समुचित सुविधा नहीं है। अतः योजना है कि पगोडा-परिसर में अलग से एक 3-4 मंजिला भवन का निर्माण किया जाय जिसमें कुछ स्थायी धर्मसेवकों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में आने वाले साधकों के लिए कुछ एकाकी और कुछ सामूहिक निवास की व्यवस्था की जा सके ताकि रात्रि-विश्राम के बाद वे सुबह आराम से उठ कर भली प्रकार साधना का लाभ उठा सकें। तदर्थ जो भी साधक-साधिका इस पुण्यकार्य में भागीदार होना चाहें, वे संपर्क करें:- 1. Mr. Derik Pegado, or 2. Sri Bipin Mehta, (details as in Archives Center). Email: audits@globalpagoda.org

ग्लोबल विपश्यना पगोडा में एक-दिवसीय महाशिविर एवं वृहत् संघदान का आयोजन

रविवार, 14 जनवरी, 2018 पूज्य माताजी एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में-- **ग्लोबल विपश्यना पगोडा** परिसर में प्रातः 10 बजे **वृहत्संघदान** का आयोजन किया जा रहा है। उसके बाद 11 बजे से साधक-साधिकाएं **एक दिवसीय महाशिविर** का लाभ ले सकेंगे। जो भी साधक-साधिका इस पुण्यवर्धक दान-कार्य में भाग लेना चाहते हों, वे कृपया निम्न नाम-पते पर संपर्क करें-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, फोन नं. 022-62427512 (9:30AM to 5:30PM), Email: audits@globalpagoda.org

एक दिवसीय महाशिविरः प्रातः 11 बजे से अपराह्न 4 बजे तक। 3-4 बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और *समग्गानं तपो सुखो*- सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं। **संपर्क:** 022-28451170, 022-62427544- Extn. no. 9, 82918 94644. (फोन बुकिंग- प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक) Online Regn.: www.oneday.globalpagoda.org

दोहे धर्म के

धन्य पड़ोसी देश के, संत और अरहंत।
रक्षित रख सद्धर्म को, मंगल किया अनंत॥
जनम मिला जिस देश में, धर्म मिला जिस देश।
जागे हृदय कृतज्ञता, श्रद्धा जगे अशेष॥
धर्म सदा जागृत रहे, प्रज्ञा पड़े न मंद।
ऐन्द्रिय सुख को भ्रांतिवश, मान न नित्यानंद॥
अंतर-गंगा धर्म की, सतत प्रवाहित होय।
प्रतिपल सजग तटस्थ रह, मुक्त दुखों से होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धर्म रा

धोळै-पीळै वस्त्र स्यूं, संत बणै ना कोय।
राग द्वेस जीं रा मिट्या, संत पूज्य है सोय॥
अंधभक्ति स्यूं मानतां, दरसन मिथ्या होय।
निज अनुभव स्यूं जाणतां, दरसन सम्यक होय॥
कोरै बुद्धि बितरक स्यूं, मान्यां सत्य न होय।
अपणै भीतर अनुभवै, सम्यक दरसन सोय॥
जब तक करसी कल्पना, तब तक मिथ्या होय।
जीं दिन अनुभवसी स्वयं, उण दिन सम्यक होय॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076·
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2561, कार्तिक पूर्णिमा, 4 नवंबर, 2017

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, आजीवन शुल्क रु. 500/-, US $ 100. "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/235/2015-2017

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

DATE OF PRINTING: 18 October, 2017, DATE OF PUBLICATION: 4 November, 2017

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. फैक्स : (02553) 244176
Email: vri_admin@dhamma.net.in;
course booking: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org